पाठ्य पुस्तकों में समाहित मूल्य पर चर्चा (शष्टाचार)

शष्टाचार यह शब्द दो शब्दों से मलकर बना है ।शष्ट+आचार) इसका अर्थ होता है जब कोई व्यक्ति बिना स्वार्थ के दूसरों का सम्मान करता है तो उसे शष्टाचार कहते हैं । शष्टाचार मनुष्य को इंसान बनाता है ।शष्टाचार व्यवहार की वह रीति नीति है जिसमें व्यक्ति और समाज की आंशक सभ्यता और संस्कृति के दर्शन होते हैं ।परस्पर बातचीत संबोधन से लेकर दूसरों की सेवा ,त्याग, आदर ,भावनाएं तक शष्टाचार के अंतर्गत आ जाते हैं ।शष्टाचार हमारे आचरण और व्यवहार का एक नैतिक मापदंड है ।जिससे सभ्यता और संस्कृति का निर्माण होता है ।एक दूसरे के प्रति सद्भावना ,सहानुभूति ,सहयोग और शष्टाचार के मूल आधार है ।इन मूल भावनाओं से प्रेरित होकर दूसरों के प्रति नम्र, वनयशील ,संयम ,आदर पूर्ण आचरण ही शष्टाचार है । शष्टाचार हमारे जीवन का दर्पण है जिससे हमारे व्यक्तित्व का स्वरूप दिखाई देता है इसके माध्यम से ही मनुष्य का प्रथम परिचय समाज से होता है ।अच्छा या बुरा दूसरों पर कैसा प्रभाव पड़ता है यह उस व्यवहार पर निर्भर करता है ,जो हम दूसरों से करते हैं शष्टाचार का दूसरों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है ।

शष्टाचार का क्षेत्र उतना ही व्यापक है जितने हमारे जीवन का समाज में जहां-जहां भी हमारा दूसरों से संपर्क होता है वही शष्टाचार की आवश्यकता पड़ती है घर में परिवार के छोटे से लेकर बड़े सदस्यों के साथ सभी जगह तो हमें शष्टाचार की आवश्यकता होती है शष्टाचार एक ऐसा सद्गुण है जिससे अभ्यास और आचरण द्वारा प्राप्त कया जा सकता है इसके लए कन्हीं वशेष परिस्थितियों या उच्च

खानदान में जन्म लेने की आवश्यकता नहीं होती है कसी भी स्थिति का व्यक्ति प्रयत्न पूर्वक शष्टाचार का अभ्यास जीवन में डाल सकता है इसके लए संवेदनशीलता हृदय की कोमलता आवश्यक है

वैसे तो माता-पता ही आरंभ से बच्चों को सामान्य शष्टाचार सखाते हैं पर आगे चलकर औपचारिक रूप से शष्टाचार की शक्षा इन्हें वद्यालय में ही मलती है कक्षा कक्ष में अध्यापक उन्हें समय-समय पर शष्टाचार की बातें बताते रहते हैं साथ ही पाठ्यपुस्तकों में भी कई ऐसे पाठों को लया गया है जिनमें शष्टाचार मूल्य समाहित है वद्यालय के समय में बच्चों को समय-समय पर शष्टाचार का प्रदर्शन करने की आवश्यकता होती है जैसे की प्रार्थना सभा में कक्षा कक्ष में अपने गुरुजनों के प्रति भोजन के समय छुट्टी के समय इत्यादि

वद्यालय की तरह ही अलग-अलग स्थानों पर शष्टाचार भी भन्न-भन्न होते हैं। इन्हें हम निम्नांकत प्रकार से वभाजित कर सकते हैं....

1.वद्यार्थी का शक्षकों के प्रति तथा अपने वद्यालय के छात्रों के प्रति शष्टाचार

2.घर में शष्टाचार

3..मत्रों से शष्टाचार

4.पास पड़ोस में शष्टाचार

5.उत्सव संबंधी शष्टाचार

6.मेहमान या मेजबान के रूप में शष्टाचार

7.परिचय संबंधी शष्टाचार

8.लेखन संबंधी शष्टाचार

1. वद्यार्थी का शक्षकों के प्रति तथा अपने वद्यालय के छात्रों के प्रति शष्टाचार इसके अंतर्गत शष्टाचार आते हैं जो वद्यालय में बालक अपने शक्षकों अपने वद्यालय के बच्चों तथा सहपाठियों के साथ करता है।जैसे अपने शक्षकों का अभवादन करना और वद्यालय में अनुशासन के साथ रहना तथा भोजन करते समय अपनी बारी का इंतजार करना

2. घर में शष्टाचार. इसके अंतर्गत वे शष्टाचार आते हैं जो हम अपने घर में सामान्य तौर पर करते हैं ।अपने माता-पता, भाई-बहन ,बुजुर्गों और संबंधयों द्वारा कए जाने वाले शष्टाचार इसके अंतर्गत आते हैं। जैसे बड़ों का कहा मानना, उनकी सेवा करना ,उनका आदर करना और छोटे-मोटे कामों में उनकी मदद करना ।उनसे शष्ट शब्दों का प्रयोग करते हुए बातें करना।

3.मत्रों से शष्टाचार. इसके अंतर्गत वे सभी शष्टाचार आते हैं जो हम अपने मत्रों से करते हैं जैसे उचत अभवादन तथा शष्ट शब्दों का प्रयोग करना

4. पास पड़ोस में शष्टाचार. यह वे शष्टाचार होते हैं जो अपने घर के आस-पास रहने वाले व्यक्तियों के साथ प्रदर्शत कए जाते हैं जैसे बड़ों को प्रणाम तथा आवश्यकता पड़ने पर एक दूसरे का सहयोग करना

5. उत्सव संबंधी शष्टाचार. उत्सव संबंधी शष्टाचार भ्रष्टाचार होते हैं जो कसी शादी ववाह जन्मदिन या कसी और तरह के उत्सव या भोज में कए जाते हैं जैसे सभी से समुचत अभवादन करना खाते समय अपनी बारी का इंतजार करना और जितना खाना खाना हो उतना ही प्लेट में लेना

6. मेहमान या मेजबान के रूप में शष्टाचार. इसके अंतर्गत वे सभी शष्टाचार आते हैं जो हम मेहमान के रूप में अपनाते हैं और जब हम मेजबान होते है।

7. परिचय संबंधत शष्टाचार. परिचय संबंधत शष्टाचार के शष्टाचार होते हैं जब हम अपना या कसी और का परिचय कसी दूसरे व्यक्ति से करा रहे होते हैं इस दौरान जो भी अच्छा आचरण अपनाया जाता है उसे परिचय संबंधत शष्टाचार कहते हैं।

8. लेखन संबंधी शष्टाचार. जब कोई व्यक्ति कोई औपचारिक पत्र या प्रार्थना पत्र या कसी अन्य प्रकार का पत्र लख रहा होता है तो उसमें अपनाए जाने वाले शष्ट आचरण को लेखन संबंधी शष्टाचार कहते हैं

9. अभवादन संबंधी शष्टाचार. हम अपने बड़ों छोटू और बराबर वालों से कस प्रकार का अभवादन करते हैं इससे संबंधत शष्टाचार अभवादन संबंधत शष्टाचार कहलाते हैं ।

कुछ ऐसे भी शब्द होते हैं जिनका हम शष्टाचार में बहुतायत प्रयोग करते हैं मुख्यता यह तीन है……

1.कृपया अथवा please

2.धन्यवाद अथवा thank you

3.खेद व्यक्त करना अथवा excuse me

4.क्षमा अथवा sorry

इन्हें मैजिक वर्ड्स या जादुई शब्द कहते हैं इनका प्रयोग शष्टाचार के अंतर्गत बहुत अधक होता है इनका प्रयोग करने वाला व्यक्ति समाज में शष्ट व्यक्ति की पहचान रखता है।

इसके अतिरिक्त कुछ और सामान्य शष्टाचार हैं जैसे बड़ों के बीच में ना बोलना ,दूसरों की राय का सम्मान करना ,बाहरी स्वरूप देख कर कसी का मजाक ना उड़ाना ,और कसी के घर में या कसी के कमरे में जाते समय हमेशा उसका दरवाजा खटखटा कर और उसकी आज्ञा लेकर ही जाना तथा सभी की निजता का ख्याल करना।

अर्चना संह
वाराणसी

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
उत्तर प्रदेश
LET NOBLE THOUGHTS COME FROM ALL DIRECTIONS